संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : ४६ ● २४ नवम्बर, २०१५ कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

स्वामी दयानन्द ने वेदों के आधार पर ही लोगों के विचारों में किया परिवर्तन

-देवेन्द्रपाल वर्मा

आर्य समाज बिसौली बदांयू का वार्षिको सत्संग समारोह बड़े ही हर्षोल्लास के साथ २४ से २६ अक्टूबर को मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे। सभा स्थल पर पहुँचते ही आर्य समाज के मंत्री विनोद वार्ष्णेय, श्री बिहारी लाल आर्य, श्री हरिप्रकाश आर्य, श्री गनेश चन्द्र गोयल, प्रधानाचार्य म.ला.इ.कालेज, बिसौली ने माल्यार्पण कर एवं शाल उढ़ाकर भव्य स्वागत किया।

स्वागतोपरांत सभा प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ने श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्वामी दयानन्द ने वेदों के आधार पर लोगों के विचारों में परिवर्तन किया। स्वामी जी ने कभी किसी पाषाण मूर्ति को नष्ट नहीं किया, किसी मत पंथ सम्प्रदाय, मजहब का उत्पीड़न नहीं किया अपितु उनके मस्तिष्क में वेद ज्ञान को जागृत कर तर्क और वितर्क के द्वारा उनके विचारों में परिवर्तन किया। स्वामी जी के सत्य को स्वीकार कर स्वतः लोग मूर्तियों को गंगा में विसर्जित कर देते थे।

श्री वर्मा ने कहा कि वेद शब्द की उत्पत्ति विद धातु से होती है जिसका अर्थ विचार है स्वामी जी ने मत पंथ सम्प्रदाय मजहब के अनुयायियों के विचारों में परिवर्तन किया और स्वयं वैदिक धर्म को स्वीकार किया उन्होंने कहा वेद ये नहीं कहता कि तुम ईसाई बनो, मुसलमान बनो, हिन्दु, सिक्ख, जैनी बनो बल्कि वेद कहता है मनुभेव मनुष्य बनो परमात्मा वेदों में मनुष्य को हे अमृत पुत्र कहकर सम्बोधित किया है जब कि इस्लाम में हे मोमिनो किसी एक सम्प्रदाय को कहकर पुकारा गया है। इसीलिए कुरान ईश्वरीय ज्ञान नही हो सकता। ईश्वरीय ज्ञान केवल वेद ही हो सकता है क्योंकि इसमें किसी विशेष वर्ग को सम्बोधित करके नहीं पुकारा गया है।

उन्होंने कहा कि लोग अब इस्लाम, ईसाई, जैन, सिक्ख आदि मत पंथों को धर्म का सूर्याप मान लिया गया है जब कि धर्म एक ही है क्योंकि परमात्मा स्वतः वेदों के माध्यम से कहता है, 'एको ही धर्मो न भवति नाना धर्म' एक है अनेक नहीं जिस प्रकार से परमात्मा ने सूर्य चन्द्रमा आकाश पृथ्वी एक ही बनाया है उसी प्रकार से धर्म भी एक है।

सभा प्रधान जी ने कहा कि आर्य समाज कोई धर्म मत पंथ या सम्प्रदाय मजहब नहीं है अपितु आर्य समाज एक आन्दोलन है और ये वैदिक धर्म के मार्ग पर ले जाने वाली संस्था है। आर्य समाज ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना एवं यज्ञ करने को बताता है न कि किसी व्यक्ति को ईश्वर मानकर उनकी भक्ति करना। यह परमात्मा का बताया हुआ आदेश है। यज्ञ से शारीरिक मानसिक और आत्मिक सुख मिलता है तथा समाज में फैल रहे प्रदूषण को रोकता है। श्री वर्मा ने कहा कि यही अलीगढ़ के मुस्लिम विद्वान सर सैयद अहमद खाँ जो स्वामी दयानन्द जी के समकालीन थे वह स्वामी दयानन्द से यज्ञ के बारे में तकरीर भी की थी। अंत में स्वामी दयानन्द जी के तर्क से निरूत्तर हुये और यज्ञ के लाभ से प्रभावित हुए और यज्ञ को श्रेष्ठ बताया।

इसके अतिरिक्त मुख्य अतिथि माननीय श्री लोकेश कुमार सिविल जज बिसौली ने कहा मुझे जो श्रेष्ठ संस्कार मिले हैं वह इसलिए क्योंकि बचपन में मेरे घर पर आर्य विद्वान आया करते थे वह भोजन करने से पूर्व वेद मंत्र बोलते थे। वे हमें बताया करते थे कि भोजन बांट कर करना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज समाज में दो प्रकार की संस्कृति है एक राम की दूसरे रावण की संस्कृति। राम की संस्कृति बांट कर खाने की और रावण की संस्कृति हरण करने की इदन्नमम की नहीं अपितु मम की है। हमें राम की संस्कृति को अपनाना है, उनके गुणों को अपनाना है तभी हम अपने को आर्य कह सकते हैं क्योंकि राम एक आर्य थे। इसके अतिरिक्त दिल्ली से पधारे डा. श्री देव शर्मा, लखनऊ से पधारे श्री विमल किशोर आर्य वैदिक प्रवक्ता, अलीगढ़ से पधारे स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के वेद प्रवचन भी हुए तथा श्री राजवीर शास्त्री दिल्ली एवं श्री दयाराम वेद पथी के सारगर्भित भजन भी प्रस्तुत किये गये। उपरोक्त कार्यक्रम में श्री योगेन्द्र कुमार गर्ग (कुन्नू) बाबू पूर्व विधायक बिसौली, श्री गनेश चन्द्र गोयल, आचार्य वेद व्रत, आचार्य ज्ञानदेव, आ. श्री हरिओम वर्मा बदांयू आदि ने उपस्थित होकर अपने विचार रखें।

●●●

ऋषि से उऋण हम नाहीं -देवेन्द्र पाल वर्मा

आर्य समाज मुजफ्फरनगर ने गत १४ नवम्बर को महर्षि दयानन्द सरस्वती का बलिदान दिवस बड़ी श्रद्धा एवं सम्मान के साथ मनाया गया।

कार्यक्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में महर्षि दयानन्द के निर्वाण की चर्चा करते हुए कहा कि देश में फैले ढोंग, पाखण्ड, छुआछूत व महिलाओं का अपमान व अशिक्षा धार्मिक अंधविश्वास पर महर्षि ने करारा प्रहार किया था। उन्होंने दिल्ली में सर्वधर्म सम्मेलन को बुला कर एक धर्म (मानव धर्म) एक ईश्वर के लिए प्रयास किया था, परंतु मतैक्य न होने के कारण प्रयास सफल न हो सका। तत्पश्चात् चांदापुर शास्त्रार्थ में उन्होंने विरोधियों के छक्के छुड़ा दिये जो दुम दबा के भाग खड़े हुए।

कई शताब्दियों के बाद उनके जैसे निर्भीक, निडर व स्पष्टवादी विशाल व्यक्तित्व का आर्य भूमि पर आगमन हुआ। राष्ट्र की पराधीनता की बेड़ियों को उतार फेंकने के लिए त्याग, बलिदान व उत्साह का संचार समाज में फैले आडम्बर व कुरीतियों को समूल नष्ट करने का अभियान, वैदिक धर्म ही प्राचीन धर्म है का उद्घोष से समस्त सोये हुए जनों में जगाने का कार्य महर्षि ने ही किया था हम उनका यह ऋण तभी चुका सकते हैं जब हम सभी उनके बताये रास्ते पर चलें।

कार्यक्रम का संचालन श्री कस्तूरी सिंह स्नेही मंत्री आर्य समाज मुजफ्फरनगर ने किया। इस कार्यक्रम में श्री राजेश आर्य, श्री फूल सिंह आर्य, श्री सरोज पाल आर्य, श्री विजय गुप्ता, श्री महेन्द्र सिंह, ठा. ओमपाल सिंह, श्री प्रमोद मित्तल आदि ने भी सम्बोधित किया। इसके अलावा श्री विजय सिंह, श्री मुकुट गुप्ता, श्री सचिन वर्मा, श्री राजेन्द्र अग्रवाल, श्री प्रतीक वर्मा, श्री मांगेरामजी, श्री आयुष गुप्ता, श्री सिद्धार्थ वर्मा, महिलायें बबीता गुप्ता, अंजना वर्मा, सुशीला व वीरमती आदि उपस्थित थी।

यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यव्रत शास्त्री जी थे।

महर्षि दयानन्द के अधूरे मिशन को आगे बढ़ाने में सभी एक मत से जुट जायें।

-देवेन्द्रपाल वर्मा

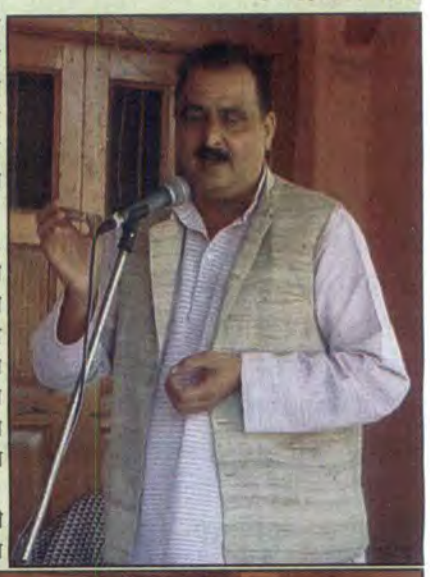

दिनांक १५-११-२०१५ को आर्य समाज भोजपुर खेड़ी जिला बिजनौर का वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। जिसमें जनपद की समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधियों व विशाल जन मानस ने हिस्सा लिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी ने अपने सम्बोधन में सभी आर्यजनों को महर्षि दयानन्द सरस्वती के अधूरे मिशन को समर्पित भाव से सारे मतभेदों को भुलाकर पूरा करने का आह्वान किया। ऋषि ने जीवन पर्यन्त लोगों को जगाने का कार्य किया।

आज पुनः उस प्रयास की आवश्यकता है अब भी यदि हम न

चेते तो सारे समाज व देश की स्थिति बिगड़ते देर न लगेगी। पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण ने आज हमारे घर-परिवार को बुरी तरह जकड़ लिया है।

जबकि अपनी प्राचीन संस्कृति का न तो लोगों को ज्ञान है और न ही उसकी महत्ता का ज्ञान है। जब तक सारे संसार का एक धर्म, एक ईश्वर एक संकल्प नहीं होगा तब तक विश्व में सुख शांति की स्थापना असंभव है।

समारोह में श्री दिलावर सिंह, श्री बृजेन्द्र सिंह, श्री रमेश आर्य, श्री रूद्र पाल सिंह आदि उपस्थित थे तथा आर्य समाज सादीपुर, बुडगारा, बहादुरपुर आदि के आर्य जनों ने भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

आस्ट्रेलिया में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन में भाग लेने के लिये आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा का प्रस्थान

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिनांक २५.११.२०१५ से ७.१२.२०१५ तक आस्ट्रेलिया में आयोजित किया गया है। जिसमें भाग लेने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने २४ नवम्बर को दिल्ली से प्रस्थान किया।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

सहिष्णुता और असहिष्णुता

आज देश में सहिष्णुता और असहिष्णुता पर अनेक राजनेता बहस करके अपने को सहिष्णु और दूसरे को असहिष्णु बताने की ओछी बयानबाजी में लग रहे हैं। परन्तु उनके बयान सहिष्णु औरअसहिष्णु का सही विश्लेषण नहींकर रहे हैं।

भारतीय संस्कृति में सहिष्णुता एक विशेष अंग है। अगर ऐसा न होता तो यवन आक्रमणकारी यहां की सम्पदा को लूट कर अपने यहां पहुंचाने यहां राज करने के बाद यही के वासी न हो जाते, वे यहां की माटी में रच बस गये। परन्तु धूर्त अंग्रेजों ने छल-छद्म से हमें ठगा लूटा व हमारे शासक बन गये हमारी पूरी संस्कृति एवं सभ्यता के विनाश के लिए प्रतिबद्ध हो गये हमारा इतिहास बदला, हमारी शिक्षा पद्धति बदल डाली ताकि हम सदा-सदा के लिए उनके गुलाम बन जायें उन्होंने हमारी भारतीय संस्कृति के विशुद्ध रूप को बिगाड़ने के लिए भोगवादी संस्कृति को प्रधानता देकर हमें भोगवाद की ओर घुमा दिया।

मनुष्य को सुख शान्ति, धन समृद्धि चाहिए परन्तु अंग्रेजों ने हमें रोजी रोटी मकान की सीमा में बांध दिया जिसके लिए प्रथम आवश्यकता धन की होती है। अतः सभी देशवासियों के लिए धन प्रमुख हो गया। जबकि भारतीय संस्कृति में धर्म प्रथम, धन द्वितीय नम्बर पर है। जब धर्म प्रथम स्थान से हट गया तो धन नंम्बर एक पर आ गया। धूम्र विहीन धन की कमाई में सभी को अन्धा बना देती है इसी कारण असहिष्णुता अपना स्थान बनाने लगती है।

राजनीति में असहिष्णुता का लांछन लगाने वाले अपने को सत्ता का अंग बनाने के लिये यह जन जन में भेद डालकर अपना स्थान ऊंचा बनाने का कुत्सित षडयन्त्र रच रहे हैं। सभी देशवासी इससे सावधान रहें। राष्ट्र को संगठित सुखी समृद्धरखने के लिए सहिष्णुता प्रमुख साधन है।

अतः आवश्यक है कि हमारी सरकार विदेशी शिक्षा पद्धति तुरन्त हटाकर भारतीय शिक्षा पद्धति चलाने का संकल्प ले। देशके सभी विद्वान विचारक शिक्षा शास्त्री और राजनेता इसपर गम्भीर चिन्तन मनन करें और सरकार एक समिति गठित करके नयी शिक्षा पद्धति बनवाये। जिसमें सम्पूर्ण ज्ञान विज्ञान के विषयों का समावेश हो नई नई वैज्ञानिक टैक्नीक का वेदानुसार चिन्तन करके उसका पाठ्यक्रम में समावेश हो। प्रमुखता नैतिक शिक्षा की प्रारम्भिक स्तर से उच्चतम शिक्षा तक रहे। जब इस प्रकार शिक्षा पद्धति आरम्भ हो जायेगी तो सहिष्णुता का सर्वाश में प्रसार होगा। असहिष्णुता जहां कहीं अपना स्थान बनाये-सरकार सख्ती से उसपर विचार करके विधि अनुसार रोक लगाये। राजनेताओं से अनुरोध है कि वे अपने क्षणिक स्वार्थ के लिए असहिष्णुता के नये नारे का प्रयोग देश हित में बन्द करें।

-सम्पादक

आर्य समाज मसेना- अम्बेडकर नगर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मसेना मिर्जापुर चहोड़ा रोड़ रामनगर जनपद अम्बेडकरनगर का ८१वां वार्षिकोत्सव दिनांक ४, ५ व ६ नवम्बर २०१५ को इन्द्रजीत वर्मा कन्या इण्टर कालेज, रामनगर में उल्लासपूर्वक भारी आर्य जनों के मध्य मनाया गया।

कार्यक्रम में प्रातः ८ बजे से १० बजे तक यज्ञ, भजन, प्रवचन व रात्रि ८ बजे से ११:३० बजे तक भजन प्रवचन हुए। जिसमें श्री पं. रवीन्द्र आर्य कानपुर, श्री पं. त्रियुगी नारायण पाठक, गोरखपुर, पं. परमानन्द प्रेमी मऊ, श्रीमती सीता सिंह आर्या अमरोहा, पं. संत मुनीश्वर जमुई बिहार, पं. राम नारायण टाण्डा आदि पधारें।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन

आगरा में 1-11-2015 को सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की अंतरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक १-११-१५ दिन रविवार को प्रातः ११ बजे से आर्य समाज नामनेर आगरा में सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें विषय सूची के अनुसार विचार विनिमय हुआ। सभी निर्णय सर्वसम्मति से लिये गये।

अंतरंग सभा के कतिपय चित्र संलग्न।

स्वाधीनता आन्दोलन में महर्षि दयानन्द का योगदान

डा.यतीन्द्र कटारिया विद्यालंकार

१९वीं सदी भारतीय इतिहास में विशेष उल्लेखनीय है क्योंकि इस सदी में दासता व अज्ञानता से त्रस्त भारत में नवजागरण संदेश लेकर भारत माता के रत्न गर्भ से एक महापुरूष श्रृंखला प्रसूत हुई। जिसमें महर्षि दयानन्द का स्थान सर्वोपरि है।

महर्षि दयानन्द का नाम आते ही उनके समकालीन भारत की दशा स्वतः जीवन्त हो उठती है। सदियों से पराधीनता के पाश में बंधा भारतीय जनमानस अज्ञानता व दासता के तमस को भेदकर विश्व के बदलते परिदृश्य के साथ खुले आकाश में सांस लेने को आतुर था लेकिन ब्रिटिश क्रूर शासन, रूढ़िवाद, संकीर्णता तथा कुरीतियों से ग्रस्त भारतीयों के लिए यह असंभव ही था। ऐसे कंकटाकीर्ण कलिकाल में भारतीय मानस पटल पर महर्षि दयानन्द का अवतरण निश्चय ही भारतीय इतिहास की महान स्वर्णिम घटना है जो वेदोद्धारक, समाज सुधारक, स्वराज्य उद्घोषक तथा प्रचण्ड स्वाभिमानी प्रतीक के रूप में स्थापित होते हैं।

महर्षि दयानन्द का भारतीय धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक क्षेत्र में अप्रतिम योगदान है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि आधुनिक भारत में नव निर्माण की नींव का आधार महर्षि दयानन्द का महान व्यक्तित्व व विराट कृतित्व है। जब हम भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन का गहन अध्ययन

शेष पेज ६ पर देखें....

धरोहर.....

राष्ट्रीय अस्मिता के उद्घोषक

आर्य शिरोमणि म. बेगराज जी भजनोपदेशक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

सिर पर गांधी टोपी, अचकन, धोती पहने गाड़ी से जब उतरकर किसी कार्यक्रम में आते तो लगता था कोई मंत्री जी आ गए, अपरिचित लोग जानने के इच्छुक हो जाते थे और जब वे अपने मधुर कंठ से गीत एवं उद्बोधन सुनाकर लोगों के हृदय में वीर रस की भावनाओं से नवीन उत्साह पैदा करते थे तो सेना के सिपाही मातृभूमि के लिए बलिदान होने को तैयार मन में एक उमंग लेकर खड़े हो जाते थे। देश भक्ति की भावनाओं से लोगों के हृदयरूपी सागर में ज्वार भाटा उमड़ पड़ता था। यह दृश्य है भारत पाकिस्तान के युद्ध के समय सैनिकों के बीच जाकर देश की रक्षा के लिए प्रेरणा देने वाले आर्य वीर सेनानी महाशय बेगराज जी युवावस्था में सामाजिक सेवा, देश सेवा के समर्पण का उन दिनों एक अपूर्व उत्साह था और लाल बहादुर शासी जी के नेतृत्व में देश अंगडाई लेकर अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए कमर कसकर तैयारी कर रहा था। ईट का जवाब पत्थर से देने के लिए और गाली का उत्तर गोली से देने के लिए इस स्थिति तक जो वातावरण बना उसमें हमारे सर्वमान्य प्रधानमंत्री जी के बाद यदि किसी दूसरे को श्रेय जाता है वे थे- आर्य समाज के सेनानी, भजनोपदेशक, उपदेशक, सन्यासी, विद्वान जो समय समय पर जाकर सेना का मनोबल बढ़ाया करते थे। उनमें से नाम लेते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता होती है कि एक नाम महाशय बेगराज जी का भी है। जो देश की सीमा पर जाकर अपनी बुद्धि कौशल से देश भक्ति की भावना युवकों में स्थापित करते थे। आज हम उन्हें स्वाभिमान एवं गौरव के साथ स्मरण करते हुए उनका नमन कर रहे हैं।

मेरे बाल्यकाल में सर्वप्रथम इनके दर्शन तब हुए जब स्वनामधन्य पूज्यपाद स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती त्रिवेदतीर्थ ने ग्राम ततारपुर में आश्रम बनाकर आर्य समाज के प्रचार हेतु एक केन्द्र की स्थापना की और उसी क्रम में सर्वप्रथम वर्ष १९६३-६४ में आर्य समाज की स्थापना करके उसका प्रथम सम्मेलन ग्राम में किया था। मुझे स्मरण आ रहा है कि उस समय आर्य समाज के दिग्गज सन्यासी विद्वान नेता एवं भजनोपदेशक पधारें थे। कुछ नाम मुझे आज भी याद हैं। यथा महात्मा अमर स्वामी (पं. अमर सिंह जी आर्य पथिक), आचार्य भगवान देव जी (स्व. स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती) जी महाराज गुरूकुल झज्जर, पं. प्रकाशवीर शास्त्री, श्री रघुवीर सिंह शास्त्री, मा. देवेन्द्र सिंह तूफान, महाशय बेगराज आर्य भूडिया, स्वामी नित्यानन्द आदि आदि। तब से ही इनके साथ आर्य वीर मोहनलाल आर्य रहते थे और उनके गीत आज भी मुझे याद है जो इन्होंने गाकर प्रेरणा दी थी और मुझ बालक के हृदय पर गहरी छाप छोड़ी थी। मैं कक्षा ६ में एक स्कूल में पढ़ता था। वहां जाकर अपनी कक्षा के छात्रों को सम्मेलन में आने के लिए प्रेरित ही नहीं किया अपितु उन घर से उन्हें अनुमति दिलाकर ग्राम अछलौता, ग्राम बागड़पुर, बाबूगढ़, सिमरौली के जो साथी मेरे साथ पढ़ते थे उन्हें लाकर भजन एवं प्रवचन सुनवाएं। उन्हें वे अच्छे लगे और आज भी हमारे तत्कालीन साथी बाल सखा निरंजन सिंह आर्य जैसे वेद प्रचार में रूचि लेकर शिक्षा संस्कृति की ध्वजा फहराकर ऋषि ऋण को उतार रहे हैं। मेरा यह सौभाग्य है कि मुझे फिर गुरूकुल ततारपुर में पढ़ने का सौभाग्य मिला और उस दिशा में महाशय बेगराज जी आर्य की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त कर सका। उनसे मुझे जो प्रेरणा मिली उस लोभ का मैं संवरण नहीं कर पाऊँगा। उनकी दिनचर्या आदर्श दिनचर्या रही है। प्रातः काल समय पर शीघ्र उठना, प्रातः उठकर व्यायाम करना विशेष रूपेण मयूर चाल दण्ड बैठक को महत्व देने से उस अवस्था में आप प्राणायाम, व्यायाम, आसन अवश्यमेव करते थे। मैंने भी मयूरचाल की प्रेरणा आप से ही प्राप्त की है। मेरे से आपकी आत्मीयता मध्याहोत्तर छाया की तरह बढ़ती ही चली गई। गुरूकुल ततारपुर प्रचार केन्द्र का पर्याय बन गया था। जिसमें महाशय जी का योगदान सर्वोपरि रहा है। आपके परिवार में भी मुझे जाने का सौभाग्य मिला है। पूज्य माता जी का स्वभाव भी वन्दनीय है। इतने स्नेहिल भाव से आतिथ्य सेवा करती थी कि मन मयूर आमोद प्रमोद में प्रफुल्लित हो उठता था और श्रद्धा से मां के चरणों में आशीर्वाद लेने के लिए लालायित हो उठता है। महाशय बेगराज जी को इस मुकाम तक ऊँचा उठाने में अभिनन्दनीय पुरूष बनाने में माता जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वेद प्रचार में एक-एक महीने बाहर रहना, पीछे से घर सम्हालना और प्रसन्नता से फिर उन्हें वेद प्रचार के लिए प्रोत्साहित करते हुए स्वास्थ्य के प्रति सचेत करना माता जी का विशेष गुण है,जो बहुत कम माताओं में होता है। आपके सुपुत्रों में अच्छे संस्कार देना और सुयोग्य नागरिक तैयार करना बेटियों आयु. कुसुमदेवी एवं आ. ओमवती देवी की योग्यता निष्ठा एवं प्रतिष्ठा सद्विवेक सुसंस्कारों का ही परिणाम है कि योग्य पिता से योग्य पीढ़ी के निर्माण हेतु अपने जीवन को सद्ज्ञान के साथ जीने का संकल्प लेकर परिवार निर्माण में समाज निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

वह भूडिया ग्राम जो कभी सभी अभावों से युक्त था न बिजली थी न सड़क, न अन्य सुख सुविधायें । आज महाशय जी के प्रयास से चारों तरफ से सड़के, बिजली, पानी, चिकित्सा आदि की सुविधा प्राप्त हैं। मुझे याद है वर्ष १९७६ में एक वृहद आर्य महासम्मेलन अपने ग्राम भूडिया में अपने ही घर पर कराया था। मैं तीन दिन तक उसमें रहा था। यज्ञ की एवं संयोजन की व्यवस्था मुझे सौंपी थी। उसमें राजनैतिक नेताओं के अतिरिक्त विद्वान, सन्यासी और अन्य आर्ष नेता भी आये थे। ग्राम एवं क्षेत्रीय समस्याओं के साथ साथ बच्चों युवकों को यज्ञोपवीत देकर प्रतिज्ञायें कराई थी। महात्मा नारायण स्वामी क्रांतिकारी की ओजस्वी वाणी को लोग आज भी याद करते हैं। महाशय जी के प्रभाव को जब मुझे निकटता से देखने का अवसर मिला आस पास के ग्रामों से लोग अपनी अपनी गाड़ियों में मेले की तरह श्रद्धा से आते थे एवं दान द्वारा सहयोग भरपूर प्रदान किया। तब से आज तक मेरी आपसे आत्मीयता बढ़ती ही जा रही है। आपकी स्मृतियों की धरोहर कवि कालीदास के शब्दों में- तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाप प्रचोदितः। उनके गुणों का समूह मेरे कान में आकर प्रेरणा देता है उस बात को भी लिखो। उसे क्यों भूल गये। फिर स्मृतियों का सागर लहरों में आकर अपना स्वरूप प्रदर्शित कर देता है।

राजनैतिक जीवन- महाशय जी का राजनैतिक जीवन सामान्य नहीं था। विशेषातिविशेष विशेषणों से विभूषित था तभी तो सभी राजनेता आपके प्रभाव से, आपकी आभा से, आपकी योग्यता से एवं आपकी ओजस्वी भाषण से प्रभावित होते थे और चाहते थे कि वे हमारी पार्टी का प्रचार करें लेकिन देशभक्त स्वाभिमानी व्यक्तित्व उन्हें ही स्वीकार करते हैं जो उनकी भावतुला पर खरे उतरते हैं। विशेष रूप से पूर्व प्रधानमंत्री किसानों के मसीहा चौ. चरणसिंह जी की प्रशंसा में आपने गीत भी गाये हैं और भाषण भी दिये है और उनकी पार्टी में आकर जन जागरण का कार्य भी किया है। मुझे स्मरण आता है कि जब चौ. साहब आपको अपने साथ रखते थे और अपने से पहले महाशय जी का कार्यक्रम कराकर जनता को भाव विभोर करते थे। उसके बाद ग्रामों में आर्य समाज के कार्यक्रम में आप श्रीमती इंदिरा गांधी सरकार के रहते हुए भी खुले मंचों से उद्घोषणा करते थे। सुना है कि हमारा देश ग्रामों में रहता है। ग्रामों का विकास शहरी व्यक्ति नहीं कर सकता, ग्राम देवता ही कर सकते हैं। मुझे कुछ पंक्तियां याद आ रही है-

इक ग्रामों का राजा, इक
शहरों की रानी।
इक हमदर्द गरीबों का, इक
दौलत की दीवानी।।

इस प्रकार का अन्तर बताकर लोगों के हृदय में किसान नेता के प्रति आस्था और विश्वास सुदृढ़ करने के आप चतुर कलाकार माने जाते थे। आपकी ओजस्वी वाणी से जन मानस प्रभावित होता था। हरियाणा से विधानसभा के प्रत्याशी भी बनें। पार्टी के प्रांतीय महामंत्री भी बने। लेकिन गुरूवर देव दयानन्द के कार्य को उधर पूरा न होता देखकर सामाजिक सेवा के संकल्प को ही सुदृढ़ बनाकर हमारे लिए प्रेरणा के स्रोत बन गये थे। वीर रस एवं देशभक्ति के गीत आपके हृदयों पर छा जाते थे।

समाज सुधार- समाज के सुधार में, कुरीतियों के विरोध में अपनी वाणी का सदुपयोग करने वाले महाशय जी का नाम राष्ट्रीय स्तर पर लिया जाता है। नारी उत्पीड़न, दहेज प्रथा एवं भ्रूण हत्या के खिलाफ आपने जो जन जागृति की है। वह शब्दों में बांचना कठिन है। लोगों की आंखों से आंसू झरने की तरह झरते मैंने देखा है। लोगों के रूमाल गीले हो जाते थे। आपने नशाबंदी के विषय में जब युवकों को आह्वान किया तो अनेक युवाओं ने नशा छोड़कर आदर्श जीवन जीने का व्रत लिया। बाल विवाह, करवा चौथ एवं कांवड़ियों पर तीखे कटाक्ष समाज सुधारने में सम्बल बने। अनावश्यक विवाहों में खर्च पर रोक लगाई जाये, मूर्ति पूजा के स्थान पर सच्चे निराकार ईश्वर की पूजा की जाये। इस पर आपका चिंतन लोगों को प्रभावित करता था। आर्य समाज के छोटे से ग्राम से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलनों तक ग्रामीणांचल से लेकर बड़े-बड़े शहरों तक भारत ही नहीं विदेशों तक में आपकी प्रतिभा का सभी ने लोहा माना है और आपको

शेष पेज ६ पर देखें....

अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालय प्रबंधक सभा, उत्तर प्रदेश

अशासकीय सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं के प्रबंधतंत्रों का प्रतिनिधि संगठन

कार्यालय- डी.ए.वी. कालेज परिसर, पं. रासबिहारी तिवारी मार्ग, लखनऊ-226004

लखनऊ रविवार ४ अक्टूबर। स्थानीय कस्तूरबा कन्या इण्टर कालेज, सआदतगंज के प्रांगण में अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालय प्रबंधक सभा, उ.प्र. का एक दिवसीय अधिवेशन आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता डा. अशोक बाजपेई, सदस्य विधान परिषद ने की थी। अधिवेशन में राजधानी एवं संगठन से जुड़े प्रदेश के विभिन्न जनपदों से आये प्रतिनिधिगणों ने भी हिस्सा लिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डा. अशोक बाजपेई, सदस्य विधान परिषद ने शिक्षा के प्रचार प्रसार में तथा शिक्षा के स्तर को बढ़ाने में अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों की जमकर सराहना की। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश को शिक्षित बनाने में अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों का महत्वपूर्ण योगदान है। डा. अशोक बाजपेई ने कहा कि सरकारी हस्तक्षेप तथा शिक्षक संघों के दबाव में प्रबंधकों के अधिकारों में कटौती की गई हैं। शिक्षक संगठनों ने प्रबंधकों को काफी कमजोर किया है। प्रदेश में शिक्षक संगठन प्रारम्भ से ही बहुत प्रभावशाली रहे हैं इसके प्रतिनिधि विधान परिषद में भी प्रतिनिधित्व करते हैं। शिक्षक संगठित है और वे दबाव बनाकर सरकारों से अपना काम करा लेते हैं जबकि प्रबंधक संगठित नहीं है। प्रबंधकों के अधिकारों में लगातार कटौती होने से प्रबंधकों को हाशिये में लाकर खड़ा कर दिया गया है। डा. बाजपेई ने कहा कि शिक्षा में आज उदासीनता आ गई हैं। विद्यालयों की संख्या तथा शिक्षकों की संख्या तो बढ़ी किंतु शिक्षा का स्तर नहीं सुधरा। उन्होंने कहा कि यदि प्रबंधकों की छोटी-छोटी समस्याओं का समाधान हो जाय तो यह प्रदेश के हित में तथा शिक्षा के हित में होगा क्योंकि प्रबंधकों की मांगे शिक्षा का स्तर सुधारने के लिए है। डा. बाजपेई ने अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों के प्रबंधकों को आश्वासन दिया कि वे उनके साथ हैं तथा शीघ्र ही माध्यमिक शिक्षा मंत्री, प्रमुख सचिव माध्यमिक शिक्षा के साथ बैठकर प्रबंधकों की जायज मांगों को निस्तारित कराने का प्रयत्न करेंगे।

इससे पहले विद्यालय प्रबंधक सभा के कार्यकारी अध्यक्ष अरविन्द कुमार तथा महासचिव अनिल कुमार अग्रवाल ने बताया कि प्रबंधकों की सभा में निर्णय लिया गया कि आगामी २६ व २७ दिसम्बर को अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों के प्रबंधकों का दो दिवसीय विशाल सम्मेलन लखनऊ में आयोजित किया जायेगा जिसमें प्रदेश के मुख्यमंत्री जी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जायेगा।

विद्यालय प्रबंधक सभा के महामंत्री डा. अनिल कुमार अग्रवाल ने विद्यालय प्रबंधतंत्रों के समक्ष उपस्थित चुनौतियों एवं समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालय प्रबंधक सभा द्वारा अब तक प्राप्त प्रबंधकों की समस्याओं पर चर्चा की और कहा कि माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास कर उनको राष्ट्र का सुयोग्य नागरिक बनाने के उद्देश्य से समाज के सहयोग से की थी। इन संस्थाओं में शासन ने जब से हस्तक्षेप करना शुरू किया तब से दिन प्रतिदिन इन विद्यालयों की स्थिति बदतर होती जा रही है। आज ये संस्थायें इस अवस्था में पहुँच चुकी हैं कि समाज का अधिकांश वर्ग इसमें अपने बच्चों को पढ़ाने की इच्छा नहीं रखता है जिसके फलस्वरूप इन विद्यालयों में फीस नगण्य होने के उपरांत भी छात्र संख्या निरन्तर गिर रही है और छात्र शिक्षक अनुपात असंतुलित हो गया है। व्यय के अनुपात में सभी शुल्क काफी कम है तथा कक्षा छः से आठ तक निःशुल्क शिक्षा ने इन विद्यालयों को बिल्कुल पंगु बना दिया है। यही सबसे बड़ी चुनौती है जिसका हम सभी को एकजुट होकर मुकाबला करना है। यदि इन विद्यालयों की आर्थिक स्थिति और इसमें पठन पाठन की व्यवस्था में सुधार न किया गया तथा इनकी प्रबंध समितियों को अधिकार संपन्न नहीं बनाया गया तो प्रदेश में समाजवादी शिक्षा व्यवस्था का ताना बाना ध्वस्त हो जायेगा और विद्यार्थी भी शिक्षा के मौलिक अधिकारों से वंचित हो सकते हैं।

डा. अनिल कुमार अग्रवाल ने कहा कि इन विद्यालयों की कतिपय समस्याओं का निदान प्राथमिकता के आधार पर होना चाहिए ये समस्यायें निम्नवत् हैं-

१. इन माध्यमिक विद्यालयों के लिए प्रशासन योजना की व्यवस्था समाप्त की जाये।

२. उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड को भंग करके इन विद्यालयों में अध्यापकों के चयन का अधिकार प्रबंधतंत्र को दिया जाये अथवा अध्यापकों के चयन की प्रक्रिया में प्रबंधतंत्र को प्रभावी रूप में भागीदार बनाया जाये। आपात स्थिति में माध्यमिक शिक्षा अधिनियम की धारा १८ के अंतर्गत चयन की कार्यवाही सुनिश्चित की जाये।

३. इन विद्यालयों के अध्यापकों/कर्मचारियों की सेवा शर्तें राजकीय अध्यापकों/कर्मचारियों की भांति की जाये। जब तक ये व्यवस्था न हो तब तक अध्यापकों तथा लिपिकों की सेवा शर्तों से निलंबन व लघु दंड के पूर्वानुमोदन की व्यवस्था समाप्त की जाये। समयबद्ध निस्तारण की व्यवस्था के साथ अपील का प्राविधान किया जाए। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड अधिनियम की धारा २१ के प्राविधानों को समाप्त किया जाए।

४. इन विद्यालयों में शिक्षण शुल्क की समाप्ति एवं निःशुल्क शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत कक्षा १ से ८ तक की गई निःशुल्क शिक्षा को दृष्टिगत रखते हुए पूर्व की भांति शुल्क की क्षतिपूर्ति की जाए।

५. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सभी शुल्कों का पुनरीक्षण किया जाए। पंखा शुल्क में आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए वार्षिक निर्धारण का अधिकार प्रबंधतंत्र को दिया जाये जैसा कि सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के लिए है। यदि ये तत्काल संभव न हो तो विकास शुल्क में यथोचित वृद्धि की जाये तथा विद्यालय में प्रतिदिन होने वाले व्ययों को इस मद से करने के लिए विद्यालय को अधिकृत किया जाये।

६. सभी छात्रकोषों तथा समपरीक्षा की अनुपालन आख्या पर विद्यालय प्रबंधक के हस्ताक्षर अनिवार्य किये जाये।

७. इन विद्यालयों के वित्तविहीन विषय/वर्ग को सेवित किया जाए।

८. मृतक आश्रित कोटे में नियुक्ति उसी विद्यालय में हो जहां का वह अभ्यर्थी हो।

९. इन विद्यालयों के सम्बद्ध प्राइमरी विभाग के रिक्त पदों पर नियुक्ति की अनुमति निश्चित समय में दी जाये।

१०. विभागीय अधिकारियों द्वारा विद्यालय प्रबंधकों को लिखे जाने वाले पत्रों की भाषा मर्यादित हो। इनके द्वारा शिक्षक संघों के दबाव में नियमों के प्रतिकूल निर्णय करने की प्रवृत्ति पर प्रभावी नियंत्रण लगाया जाये और ऐसे निर्णय के लिए इनको प्रतिकूल प्रविष्टि दी जाए जिससे न्यायालयीय वादों में कमी हो।

११. विद्यालय समय में शिक्षक/शिक्षक नेताओं के विभागीय अधिकारियों से मिलने पर कड़ी रोक लगाई जाए।

१२. इन विद्यालयों में पठन पाठन का माहौल बनाने के लिए बायोमेट्रिक एटेंडेण्स की व्यवस्था अनिवार्य की जाए तथा आकस्मिक निरीक्षण की प्रभावी व्यवस्था पुर्नस्थापित की जाए।

१३. इन विद्यालयों में शिक्षकों/कर्मचारियों को मेटरनिटी लीव तथा चाइल्ड केयर लीव अनुमन्य किये जाने पर प्रतिस्थानी की व्यवस्था की जाए।

१४. स्कूल मैनेजमेंट एण्ड डेवलपमेंट कमेटी का नाम बदला जाए।

१५. न्यायालयीय निर्णयों पर त्वरित कार्यवाही करते हुए अधिकारियों को निर्देश प्रसारित किये जाए।

इससे पहले मंच पर डा. अशोक बाजपेई, सदस्य विधान परिषद का आमंत्रण कार्यकारी अध्यक्ष अरविन्द कुमार, महासचिव डा. अनिल कुमार अग्रवाल व संयोजिका डा. माया गुप्ता ने किया। मंचासीन लोगों ने मां सरस्वती के चित्र के समक्ष माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया। मुख्य अतिथि को बुके संयोजिका डा. माया गुप्ता ने दिय। वन्देमातरम् एवं स्वागत गीत कस्तूरबा कन्या इण्टर कालेज की छात्राओं एवं अध्यापिकाओं ने प्रस्तुत किया। स्वागत भाषण डा. माया गुप्ता ने तथा डा. अशोक बाजपेई का औपचारिक परिचय उपाध्यक्ष विजय दयाल ने दिया। प्रबंधक सभा के गठन के उद्देश्यों पर प्रकाश अरविन्द कुमार ने डाला। द्वितीय सत्र में शासन को सौंपे जाने वाले मांगपत्र के अंतिम रूप पर विचार किया गया। विभिन्न जिलों से आये प्रबंधकों मैथिलीशरण श्रावस्ती, चरनजीत पाण्डेय बलरामपुर, धीरज सिंह बुलन्दशहर, दिनेश सिंह बलिया आदि ने भी अपने विचार रखे और प्रबंधकों को उनके अधिकार दिलाने की सरकार से मांग की।

●●●

हम अपने बच्चों को बचपन से ही वैदिक संस्कार दें ताकि वे सच्चे मानव बनें।

देवेन्द्र पाल

दिनांक ६.११.२०१५ आर्य समाज इस्लाम नगर जनपद बदांयू का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव आर्य कन्या इण्टर कालेज के प्रांगण में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा आर्य कन्या इण्टर कालेज में नवनिर्मित हाल का शुभारम्भ किया।

इस अवसर पर यज्ञ, भजन व प्रवचन का आयोजन किया गया। आर्य कन्या इण्टर कालेज की छात्राओं ने आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी का स्वागत गीत गाकर किया तथा थाल में दीपक सजा कर दीपावली पर्व मनाया। कार्यक्रम में सभा प्रधान जी ने अपने ओजस्वी सम्बोधन में कहा कि हर आर्य अपने परिवार के बच्चों को बचपन से ही वैदिक संस्कार संध्या, हवन आदि आदतें डाले जिससे वे बड़े होकर वे झूठे आडम्बर व कल्पित रिवाजों में न फंसे।

आज इसी कारण हमारे नवयुवक नवयुवतियां आर्य समाज में आने से कतराते हैं। शायद उनके अनुसार कार्यक्रम नहीं होते। जरूरत है उन्हें इस तरफ मोड़ने की उनकी मनोदशा व रूचि को बचपन से ही ढालने पर ही वे सच्चे वैदिक संस्कारी व प्रतिभावान बनेंगे।

कार्यक्रम में चेयरमैन श्री वीरेन्द्र लीडर, श्री संजीव गुप्ता, श्री श्रवण कुमार अग्रवाल, श्री राजीव मित्तल, श्री कवीन्द्र कुमार, श्री हितेन्द्र शंखधर, श्री रत्नदीप आर्य आदि के अलावा काफी संख्या में आर्य नर नारी उपस्थित थे।

अच्छे दिन कब आयेंगे?

हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'

भारत में अच्छे दिन लायेंगे, यह शब्द सन् २०१४ के अप्रैल मास में भारतीय जनता पार्टी के नेता नरेन्द्र मोदी जी ने अपने भाषण में कहा था और यह भी कि जो पिछली कांग्रेस सरकार वर्षो से भ्रष्टाचार एवं मंहगाई आदि को न दूर कर सकी उसे मैं दूर कर दूंगा।

जनता ने विचार किया कि मोदी जी जैसा त्यागी, बुद्धिमान, तपस्वी, निःस्वार्थी, दृढ़, स्वाभिमानी, साहसी, राष्ट्रभक्त, चरित्रवान एवं जिन्होंने गरीबी को बहुत नजदीक से देखा है उसके जैसा हम सबका दुख दर्द को समझने वाला दूसरा और कोई नेता नहीं हो सकता, इसलिए उन्हें ही गरीबों का मसीहा समझकर और बाबा रामदेव के वचन को जिनकी यह मांग थी कि भारत का जो कालाधन स्विटजरलैंड आदि विदेशों में जमा है उसे जनता के हितार्थ लाना है जब मोदी जी ने चुनाव के समय काला धन को लाने के लिए स्वीकार कर लिया तब रामदेव के लाखों समर्थकों एवं बनारस आदि के सभी लोगों ने उनके वायदों पर विश्वास करके वोट देकर सर्वाधिक मतों से विजयी बना दिया।

अब बी.जे.पी. सरकार का एक वर्ष पूर्ण हो चुका है। जनता ने क्या खोया और क्या पाया। अच्छे दिन कब आयेंगे?विदेशों में जम की गई भारत के काले धन को निकाल कर उसे राष्ट्रीय सम्पत्ति कब घोषित किया जायेगा?परिवार के शिक्षित नवयुवकों को नौकरी कब मिलेगी?दलित वर्ग और मजदूरों को लोग अच्छी नजर से कब देखेंगे?किसानों की विविध समस्या कैसे कब सुधरेगी?झोंपड़ी में रहने वाले गरीबों को मकान और रोजगार कब मिलेगा?पवित्र गंगा जल में जो शहरों के गंदे पानी और कूड़ा इत्यादि प्रवेश कर रहे हैं उनसे वह मैली हो गई हैं उन गंदगियों को कैसे रोका जायेगा?उस गंदे जल का शोधन मशीनों द्वारा कब किया जायेगा?भारत के प्रधानमंत्री मोदी सरकार ने वोट के समय बनारस आदि स्थानों में जितने वायदे किये थे उनमें से हमारे विचार में अभी तक कुछ ठीक से होते नहीं दिख रहे हैं। मंहगाई खाद्यान्न पदार्थो के मूल्य पहले से अधिक हो गये हैं। अगस्त २०१५ में दाल १५० रूपये किलो, सब्जी ६० और ५० रूपये प्रति किलो से नीचे नहीं है, इन मंहगाई से मध्यम और गरीब वालों को कष्ट हो रहा है। जनसंख्या बढ़ी हैं तो उत्पादन भी बढ़ा है फिर भी न जाने क्यों मंहगाई बढ़ रही हैं।

कानून व्यवस्था की कमियों से अनाचार, चोरी, हत्या, बलात्कार आदि होते ही रहते हैं। क्या बदलाव हुआ हैं?केवल तीन काम अच्छे दिख रहे हैं- १. मोदी जी के विदेशों के भ्रमण से भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी हैं?२. जन धन योजना और ३. योग दिवस के प्रचार से भारत विश्व गुरू बन गया, इससे शरीर मन और आत्मा की शुद्धि होती है। किंतु देश का विकास कैसे हो इसी में बी.जे.पी. सरकार लगी हुई हैं। बढ़ती हुई मंहगाई को घटाना हैं- बिजली और पानी की व्यवस्था अभी ठीक से नहीं सुधरी है।

जिन्हें सुरक्षा मंत्री, गृहमंत्री आदि बनाया गया है वे क्या देश के प्रति बिल्कुल सही ढंग से काम कर रहे हैं। चुनाव के समय जो नेता जनता के सामने उनके भले के लिए जो जो काम करने को कहा था वे लोग क्या ठीक से काम कर रहे हैं, या केवल विचार विमर्श ही करते रहते हैं। एक वर्ष हो गया किंतु क्या परिवर्तन हुआ?

भारत की सीमाओं पर पाकिस्तानी सेना और आतंकवादी अन्यायपूर्वक गोलीबारी करते रहते हैं। इस विषय में अब भारत को शान्तिप्रिय नहीं बनना है, मुँहतोड़ जवाब देना है और हो सके तो जहां आतंकवादियों को तैयार किया जाता है उन स्थानों को नष्ट कर देना चाहिए। यदि दूसरा देश होता तो भारत जैसा बार बार शांति आदि वार्ता के लिए आमंत्रित न करता। क्या पाकिस्तान १९९९ के कारगिल युद्ध को भूल गया है। जितनी कद्र भारत में मुसलमानों की होती है उतनी हिन्दुओं की कद्र पाकिस्तान में नहीं होती है। पाकिस्तान में सन् १९४७ से आज तक कोई भी हिन्दू राष्ट्रपति नहीं बना है।

एक तरफ जहां विदेशों में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी है वहां दूसरी तरफ उसके अन्दर केन्द्र और राज्यों में अनेकता बनी हुई हैं। आरोप प्रत्यारोप एक दूसरे पर लगाये जा रहे हैं। यदि मंत्री गणों में ऐसे ही परस्पर द्वेष भावना बनी रही तो उन सबसे देश का भला कैसे हो सकता है।

समय समय पर अनेक विषयों को लेकर आन्दोलन होते रहते हैं। वे क्या चाहते हैं, उनकी मांग क्या हैं, यदि तुरंत सुनवाई हो तो कोई आन्दोलन न हो, उन्हें समझाया जा सकता है। यदि उनकी मांग न्यायसंगत हैं तो उसे अवश्य पूरा करना चाहिए।

प्रशासन की तरफ से कोई खास ध्यान नहीं दिया जा रहा है इसलिये सब युवतियां, विद्यार्थी अपने घर से कॉलेज तक आने जाने में असुरक्षित बोध करती रहती है। सिने जगत के नंगेपन से विलासिता बढ़ती जा रही है जिससे युवा वर्ग का नशा आदि से भी जीवन बरबाद हो रहा है। स्कूल एवं कालेजों में केवल भौतिक शिक्षा दी जा रही है, वैदिक आध्यात्मिक शिक्षा का नाम भी नहीं है। जब तक उनकी पाठ्य पुस्तकों में आध्यात्मिक शिक्षा का समावेश नहीं किया जायेगा तब तक उन विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण नहीं होगा, माता-पिता-आचार्य के प्रति उनकी श्रद्धा उत्पन्न नहीं होगी। अतः युवाओं के सुधार से ही समाज का सुधार होगा और अच्छे शिक्षित समाज से ही अच्छे अच्छे लोग जब देश के कर्मचारी, बड़े अफसर और मंत्री बनेंगे तो भारत के अच्छे दिन के आने में विलंब नहीं होगा और यदि भारत सरकार विदेशों में जमा किये गये भारत के काले धन को प्राप्त कर ले तो जनता हर तरह से सुखी और सम्पन्न हो जायेगी। टैक्स में कमी, मंहगाई में कमी, पेट्रोल, डीजल, गैस में कमी, मार्गो का विकास, बिजली, पानी के बिल सस्ते, गरीबों के लिए मकान, रोजगार और कल कारखाने आदि विकसित होने लगेंगे। अतः सारी समस्यायें दूर हो जायेंगी। बाबा रामदेव की गणित के अनुसार ५०० लाख करोड़ कोई मामूली धन नहीं है।

भारत की जनसंख्या आज एक सौ पच्चीस करोड़ है। भारत में जितने आन्दोलन हो रहे हैं उन सबका मूल सत्ता, धन और सम्पत्ति है।

जिस समय भारत स्वाधीन हुआ था उस समय के पश्चात देश के नेता एकता, वीरता, उत्साह और सच्चाई के साथ एक मुखी होकर कार्य करते थे। सब कोई देश की तरक्की चाहते थे। किंतु आज हमारे कुटुम्ब जैसे समाज में आन्तरिक एकता नहीं है। दलबंदी का युग आ गया है, कौन पार्टी कितना अपने दल को शक्तिशाली बना सकता है ताकि केन्द्र और राज्य में अधिकार प्राप्त कर सके यही प्रयत्न किया जा रहा है। देश हित की चिन्ता किसी को नहीं हैं क्योंकि यदि देश हित की होती तो सन् १९९६ के पूर्व एवं बाद के मंत्री कितने सदाचारी थे पता नहीं था किंतु अब पता लग गया है कि कुछ को छोड़ कर पूर्व के मंत्री, बड़े अफसर एवं बड़ी कम्पनियां भारत का अवैध रूप से कमाये गये काले धन को विदेशों में जमा करते आ रहे थे। परिणाम भारत का आर्थिक आधार की कमियों से सबका विकास नहीं हो पा रहा है।

जो अच्छे काम हैं, जो उचित है और जिससे देश की भलाई हो सकती है, उसे कोई भी वह सरकार जो प्रजा को दुखी नहीं देखना चाहती है उसे ही जनता स्वीकार करती है। शास्त्रों में कहा गया है कि जैसे अच्छे कर्म न करने से आयु घट सकती है वैसे ही बराबर उत्तम कर्म करते रहने से आयु बढ़ सकती है। जैसे कर्मानुसार आयु न्यूनाधिक होती है वैसे ही मंत्रियों के अच्छे व्यवहार से जब जनता सुखी रहती है तभी उन्हें पुनः चुनाव में जनता विजय की अधिकारी बना सकती है और यदि मंत्रीगण पूर्व में किये गये वादों को भूल जाते हैं तो जनता भी समय आने पर उन्हें भूल जाती है।

मु. व पो.- मुरारई
जिला-वीरभूम
प.बंगाल मो.-
८१५८०७८०११

आर्य कन्या गुरूकुल सिरोही की ब्रह्मचारिणियां पुरस्कृत

हरियाणा संस्कृत अकादमी एवं गुरूकुल रेवली के संयुक्त तत्वावधान में १० अक्टूबर २०१५ को आयोजित अखिल भारतीय शास्त्रीय स्पर्धा का आयोजन हुआ। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित हुई। इन विभिन्न प्रतियोगिताओं में आर्य कन्या गुरूकुल सिरोही-राजस्थान की छः बालिकाओं ने भाग लिया। जिसमें व्याकरण अष्टाध्यायी भाष्य प्रथमावृत्ति १-४ अध्याय शलाका में ब्र. प्रज्ञा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रथमावृत्ति ५-८ अध्याय शलाका में ब्र. कृष्णा ने प्रथम व ब्र. मनीषा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। संयुक्त श्लोक गायन प्रतियोगिता में ब्र. कृष्णा व ब्र. प्रज्ञा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। धातु पाठ कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता में ब्र.सुनीति ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इन बालिकाओं के गुरूकुल पधारने पर आचार्या सूर्या देवी, आचार्या धारणा याज्ञिकी, गुरूकुल की मंत्री श्रीमती आशा नागर सहित समस्त प्रबंध समिति ने राजस्थान व गुरूकुल का गौरव बढ़ाने पर स्वागत सत्कार के साथ शुभाशीष प्रदान किया।

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज चौक प्रयाग इलाहाबाद में दिनांक २६ अगस्त से ५ सितम्बर २०१५ तक वेद प्रचार सप्ताह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें आचार्य पं. आनन्द पुरूषार्थी होशंगाबाद, पं. भीष्म आर्य, बिजनौर तथा पं. श्याम सुन्दर शर्मा प्रयाग आदि पधारें।

दिनांक ६ सितम्बर २०१५ को स्व. पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय जी का जन्म दिवस मनाया गया तथा विशाल सहभोज का भी आयोजन किया गया।

समारोह में श्री रवीन्द्र नाथ जी, श्री पंकज जायसवाल, श्री अजय कुमार गुप्ता, श्री विवेक गुप्ता, श्री मदन शर्मा, श्री अरूणेश जी, श्री श्याम मोहन जी, श्री विनय शुक्ला, श्री लाल बहादुर शर्मा आदि का विशेष सहयोग रहा।

पृष्ठ २ का शेष.....

करते हैं तो उसके मूल में महर्षि दयानन्द का महान योगदान परिलक्षित होता है।

महर्षि दयानन्द का १८५६ से लेकर १८६० ई. तक का जीवन चरित्र विद्वानों के लिए मौन ही रहा है। स्वराज्य का डिमडिम घोष करने वाले प्रखर सन्यासी महर्षि दयानन्द भारत की पराधीनता से गहन व्यथित थे। निश्चय ही उनके जीवन काल का यह अंश सक्रिय स्वतंत्रय चेतना के रूप में रहा। साहित्य लेखन व सार्वजनिक भाषणों में उनके द्वारा स्वभाषा, स्वराज्य, स्वदेश व स्वधर्म की भावना रह-रह कर मुखरित होती रही। अतः इस वास्तविकता को कदापि नकारा नहीं जा सकता कि महर्षि दयानन्द १८५७ई. के स्वातन्त्रय समर में न सिर्फ सक्रिय थे बल्कि एक मौन साधक के रूप में उसके महान पुराधाओं में से एक थे। वीर विनायक सावरकर की पुस्तक '१८५७ का स्वातन्त्रय समर' के अनुसार इस क्रांति को फैलाने में सभी मतों के साधुओं का सक्रिय योगदान था। यह टिप्पणी स्वामी जी के योगदान की पुष्टि करता है। स्वामी सच्चिदानन्द योगी द्वारा लिखित दयानन्द चरित्र में योगी जी ने महर्षि दयानन्द के १८५७ई. क्रांति में योगदान को तार्किकता के साथ प्रस्तुत किया है। बाल गंगा धर तिलक महर्षि दयानन्द को स्वातन्त्रय क्रांति का संदेश वाहक के रूप में स्वीकार करते हैं। डा. सत्यकेतु विद्यालंकार आर्य समाज का इतिहास के चौथे खण्ड में लिखते हैं कि हम इस बात की प्रबल संभावना पर विचार कर चुके हैं कि सन् १८५७ ई. की स्वातन्त्रय क्रांति में महर्षि दयानन्द व उनके गुरू विरजानन्द दण्डी का सक्रिय योगदान था। बल्कि ये क्रांति का विस्फोट करने वाले पुरोधाओं में से थे। डा. सत्यकेतु आगे लिखते हैं कि महर्षि दयानन्द उन व्यक्तियों में से थे जो १८५७ ई. की क्रांति से निराश नहीं हुए बल्कि संग्राम की विफलता पर विचार कर उन्हें दूर करने व उद्देश्य प्राप्ति के लिए प्रयत्न जारी रखने वालों में से थे।

महर्षि दयानन्द समकालीन भारत की दुर्दशा से सर्वथा दुखी थे। अस्मितामयी भारत भूमि पर वैदेशिक दमनकारी शासन से उनका हृदय विदीर्ण था। स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में भारतियों के गौरवशाली अतीत की ओर संकेत करते हुए लिखते हैं 'जो आर्यावर्त से भिन्न देश है वह दस्यु तथा मलेच्छ कहलाते हैं।' स्वामी जी आगामी पंक्तियों में स्वराज्य की भावना को उग्रता से स्फुटित करते हुए लिखते हैं ' अब अभाग्योदय से आर्यो के आलस्य व प्रमाद व परस्पर विरोध से अन्य देशों में भी आर्यो का अखण्ड, स्वतंत्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है जो कुछ है वह विदेशियों से पदाक्रान्त हो रहा है।' ग्यारहवें समुल्लास में स्वामी जी पुनः गौरवशाली की ओर इंगित करते हैं - यह निश्चय है जिनसे मत, विद्या, भूगोल में फैले हैं, वह सब आर्यावर्त देश से ही प्रचारित हुए हैं- यह आर्यावर्त देश ऐसा है जिसके सदृश दुनिया में दूसरा देश नहीं हैं।

इसी संदर्भ में स्वामी जी संस्कृत वाक्य प्रबोध नामक पुस्तक में पशु-पक्षियों के उदाहरण देकर स्वाभिमान को जागृत करते हैं और लिखते हैं कि वह तो पशु पक्षियों का भी स्वभाव है कि जब कोई उनका घर छीन लेता है तो वे यथाशक्ति प्राप्ति का प्रयत्न करते हैं।

जनवरी सन् १८७३ ई. में महर्षि दयानन्द व लार्ड नार्थ ब्रुक के मध्य कलकत्ता शहर में भेंटवार्ता का आयोजन रखा गया। वार्ता में लार्ड नार्थ ब्रुक ने स्वामी जी से निवेदन किया कि वे भारत में ब्रिटिश शासन का समर्थन व सहयोग करें। प्रत्युत्तर में स्वामी जी ने नार्थ ब्रुक को ललकारते हुए कहा कि मेरे देशवासियों को अबोध राजनैतिक उन्नति तथा संसार के अन्य राज्यों के समान दर्जा पाने के लिए शीघ्र पूर्ण स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। नार्थ ब्रुक ने यही पर अपनी वार्ता स्थगित कर दी तथा लन्दन स्थित कार्यालय को रिर्पोट दी कि इस विद्रोही फकीर पर कड़ी दृष्टि रखने की आवश्यकता है।

महर्षि दयानन्द देशी रियासतों की आपसी कलह, निरंकुशता व राजाओं की भोग विलासिता से खासे रूष्ट थे। सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी ने आपसी कलह के दुष्परिणाम एवं अंग्रेजों की फूट डालो, शासन करो नीति का भण्डा फोड़ करते हुए लिखा- जब भाई-भाई आपस में लड़ते है तब तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। स्वराज्य के उत्कृष्ट अभिलाषी स्वाभिमानी महर्षि दयानन्द ने देशी रियासतों में जा-जा कर राजाओं के स्वाभिमान को ललकारा तथा उन्हें उनके कर्तव्य से परिचित कराया।

महर्षि दयानन्द स्वदेशी, स्वराज्य व स्वभाषा के सर्वप्रथम प्रचारक व समर्थक थे। स्वदेशी शब्द का प्रयोग वह बड़े व्यापक रूप में करते थे। इससे वह अपनी भाषा व संस्कृति को समाहित करते हुए अपनाने पर बल देते थे। १६०५-०६ ई. में स्वदेशी आन्दोलन प्रारम्भ होने से तीस वर्ष पूर्व महर्षि ने स्वदेशी वस्तुओं के बहिष्कार पर बल दिया। जब कांग्रेस नेता ब्रिटिश शासन को ईश्वरीय वरदान व दैवीय व्यवस्था समझ रहे थे, उस समय महर्षि दयानन्द स्वराज्य व स्वदेशी की महिमा का प्रचार व प्रसार कर रहे थे। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ डा. सत्यकेतु विद्यालंकार लिखते हैं- ''महर्षि दयानन्द नमक कानून का विरोध करने वाले संभवतः पहले नेता थे उन्होंने १८७५ ई. में प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश में नमक कर कानून की कड़ी आलोचना की। इसी संदर्भ में विख्यात इतिहासकार डा. रमेश चन्द्र मजूमदार भी स्वाधीनता आन्दोलन में महर्षि दयानन्द की भूमिका के बारे में लिखते हैं- महर्षि दयानन्द का एक प्रधान उद्देश्य भारत की स्वाधीनता का था। वस्तुतः वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया तथा जनता का आवाहन किया कि वह भारत में बनी स्वदेशी वस्तुओं का ही इस्तेमाल करें।

समाज सुधारक, धर्मोद्धारक, स्वराज्य व नवचेतना के प्रतीक महर्षि दयानन्द के विचारों एवं सिद्धान्तों ने न केवल भारतवासियों को ही अपितु विदेशी विचारकों एवं विद्वानों को भी पूर्ण प्रभावित किया। नोबेल पुरस्कार विजेता रोमां रोल्या''द लाइफ ऑफ रामकृष्ण'' में लिखते हैं - महर्षि दयानन्द भारतीय जनता के उद्धारक एवं राष्ट्रीय चेतना आन्दोलन के शक्ति पुंज थे।

यूरोप में जो कार्य बेकन, दस्कार्ते, स्यिजनोजा, वाल्तेयर आदि विचारकों ने किया, उससे कहीं ज्यादा भारत में महर्षि दयानन्द द्वारा किया गया हैं।

विद्यालंकार सदनम्
मौ.- महादेव, धनौरा- २४४२३१
जनपद- अमरोहा
मो.- ०६४१२६३४६७२

पृष्ठ ३ का शेष.....

सम्मानित किया है। आर्य समाज के उपदेशकों में आपकी अपनी प्रतिष्ठा है तभी तो अखिल भारतीय आर्य भजनो उपदेशक समिति का निर्माण किया। उसमें आपको अध्यक्ष पद पर प्रतिष्ठित किया गया यह आपकी सर्वोच्च प्रतिष्ठा का प्रतिमान था। आर्य समाज बम्बई और कलकत्ता के द्वारा आपको सर्वश्रेष्ठ आर्य उपदेशक सम्मान से सम्मानित किया गया। पूरे देश में आपको सम्मानित कर आर्यजन गौरवान्वित होते और अपना सौभाग्य अनुभव करते। आप हमारे जनपद के गौरव थे। गाजियाबाद जिले की रजत जयन्ती पर प्रकाशित सरकारी गजट एवं स्मारिका में भी आपको जिले के विशिष्ट व्यक्तित्व के सम्मान से सम्मानित किया गया। आर्य समाज के इतिहास में आपका नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो गया। आप उदारमना थे गरीबी की रेखा से नीचे रह रहे लोगों के जीवन का चित्रण जब आप करते तो लगता था अभी देश स्वतंत्र होने के बाद भी आम जन के लिए विशेष प्रगति नहीं हुई हैं। कई बार आपकी वाणी से लोगों ने ये गीत बड़ा मंत्र मुग्ध होकर के सुना है-

इक तन पै, सोने के तार खिंचे, इक तन पर सूत का तार नहीं
इसलिए बगावत करता हूँ यह न्याय मुझे स्वीकार नहीं।
हल का हत्था देखा ही नहीं, हकदार हजारों बीघे का।
जीवन बीता हल चलाते पर बीघे का हकदार नहीं।

यह कविता बहुत भावपूर्ण और बहुत बड़ी है, पर प्रभाव विशेष डालती है। ईश्वर भक्ति के गीतों में लोगों को झूमते देखा है।

१. मैं तुमको पहचान न पाया..... मैं तुमको
२. ओ३म् नाम मधुर नान गाये जा..... गाये जा।

आशाराम त्यागी के बलिदान की गाथा जब सुनाते तो सभी रोमांचित हो जाते थे। इस प्रकार की प्रतिभा के धनी ने कभी अवसरवादियों से समझौता नहीं किया। कभी गुरूवर ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों से विरूद्ध समझौता नहीं किया। आज कथा सम्राट बनकर भगवान बनकर लाखों करोड़ों में खेल सकते थे। लेकिन महर्षि दयानन्द के सच्चे सिपाही उनके मन्तव्यानुसार भतृहरि जी के शब्दों में- न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदम न धीराः। न्याय के पथ से धीर वीर कभी विचलित नहीं होते, चाहे कोई स्तुति करे, गाली दे, लोभ लालच दिखावे अथवा आज ही मौत क्यों न डस ले, लेकिन सत्य के मार्ग पर बढ़ते रहेंगे। कभी पीछे नहीं हटेंगे ऐसे थे हमारे प्रेरणास्रोत महाशय बेगराज आर्य। आप राष्ट्रीय अस्मिता के उद्घोषक थे। आप वेद वेदांग के प्रवक्ता एवं संगीत के सम्राट थे। आप वेदों की रक्षा, देश की रक्षा, संस्कृति सभ्यताकी रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते थे। आपका अभिनन्दन आपके सहयोगी एवं आपसे प्रभावित जनों द्वारा पुण्य परम्परा का पालन किया गया है।

आपका पूर्ण जीवन स्वाभिमानी रहा आप सदैव महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के लिए जिये और आर्य समाज के लिए ही मरे। मुझे वह क्षण याद है जब गत वर्ष ७ अगस्त को प्रातःकाल म.वेदानन्द जी आर्य कुचेसर रोड द्वारा फोन पर पता चला कि आज आर्य समाज के सेनानी म.बेगराज जी आर्य नहीं रहे, मैं तभी उनके अंतिम दर्शनों के लिए चल पड़ा और अंतिम यात्रा में सम्मिलित हुआ ओजस्वी वीर रस के गायक को गुरूकुल एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की ओर से श्रद्धांजलि दी। कुछ दिन पूर्व आपने घर पर मुझे बुलाकर परिवारीय यज्ञ कराया था और मुझे अपना शुभ आशीर्वाद दिया था, वहीं सब स्मृतियाँ ताजी हो रही थी पर जो भी प्रभु की इच्छा बलीयसी है ऐसा स्वीकार कर उनका अंतिम संस्कार हमारे बड़े भाई श्री वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय वैदिक विद्वान की देखरेख में सम्पन्न हुआ। सब की आंखे नम थी मोहन लाल आर्य, यज्ञपाल, राजेन्द्र यादव गाजियाबाद सभी व्यवस्था में संलग्न थे। उनकी स्मृतियों की धरोहर हमें सदैव प्रेरणा प्रदान करती रहेगी, पूरे आर्य समाज ने शोक मनाया। जिला सभा हापुड़ के वे पितामह थे।

मैं इस अवसर पर गुरूकुल परिवार की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की ओर से एवं समस्त आर्य बंधुओं की ओर से सादर नमन करता हूँ।

जननी जने तो भक्तजन या दाता या शूर।
ना तो जननी बांझ रहे, काहे गंवाये नूर।।

गुरूकुल महाविद्यालय पूठ की रजत जयन्ती के उपलक्ष्य में प्रांतीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

11 लोगों ने ली वानप्रस्थ दीक्षा तथा आचार्य अरविन्द आर्य ने ली सन्यास दीक्षा बने स्वामी अखिलानन्द सरस्वती

८ नवम्बर २०१५ गढमुक्तेश्वर गंगा किनारे पर प्राचीन तीर्थ स्थली पुष्पावती धाम से प्रसिद्ध पूठ नामक ग्राम में आज से २५ वर्ष पूर्व बाबा सीताराम जी के आशीर्वाद से तथा स्वामी प्रणवानन्द जी के सत्परामर्श से स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती ने गुरूकुल की स्थापना की थी। उसी गुरूकुल की रजत जयंती पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ ने प्रांतीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जिसका शुभारम्भ प्रातः सामवेद यज्ञ से हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रणधीर कुमार शास्त्री के निर्देशन में ब्र. राजन आर्य, ब्र. शिवम् आर्य, ब्र. अंशुल आर्य, ब्र. प्रमोद आर्य, ब्र.प्रदीप शास्त्री एवं ब्र.ऋषभ शास्त्री ने वेद पाठ किया। यजमान स्याना बुलन्दशहर के प्रधान नरेन्द्र आर्य, माता सुदेश आर्या उनके पुत्र ऋषिदेव आर्य एवं पौत्र अनुव्रत-पूलिका आर्य श्रीमती कुशाग्र आर्या, ऋषि डेरी स्याना के प्रबंधक ऋषिपाल सिंह आर्य रहे। बाद में पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी का प्रवचन उपदेश हुआ। पं. दिनेश दत्त जी के भजन हुए यज्ञ में उप जिलाधिकारी श्री के.बी. सिंह *मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित* हुए व उद्घाटन भाषण दिया।

तत्पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी ने स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के साथ ध्वजारोहण किया। ओ३म् के झण्डे को फहराकर सम्मेलन का विधिवत् उद्घाटन किया। प्रधान जी ने आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम यह पाखण्ड खण्डिनी पताका हरिद्वार के कुम्भ में फहराकर एक सन्देश दिया कि सदैव सच्चाई के लिए प्रयत्नशील रहो बुराइयों से बचते रहो। मा. देवेन्द्र पाल वर्मा जी की अध्यक्षता में उद्घाटन सत्र चला जिसमें *मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्रीय* सांसद श्री कुँवर सिंह जी तँवर रहे आपने आर्य समाज की प्रशंसा की तथा गुरूकुल पूठ का योगदान इस क्षेत्र के लिए वरदान है। चौधरी ऋषिपाल सिंह जी ऋषि डेरी स्याना ने अपना स्वागत भाषण पढ़ा और इस संस्था को प्राचीन महाभारत काल की उपलब्धि बताया। पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने वेद मंत्र की व्याख्या करते हुए स्वर्ण जयन्ती तक की योजनाओं से आर्य जनता को परिचित करा कर उत्साहित किया। पं. दिनेश दत्त जी दिल्ली ने ईशभक्ति देशभक्ति एवं महर्षि दयानन्द जी के विषय में अपने मधुर कण्ठ से गीत सुनाये। मध्यान्ह सत्र में गोरक्षा एवं किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता स्वामी यज्ञमुनि जी मु. नगर ने की। मुख्य अतिथि चौ. नरेश टिकैत के सुपुत्र चौ. गौरव सिंह टिकैत रहे। किसान नेता बी.एन.सिंह ने अपने विचारों से किसानों को सावधान किया। श्री रूपचन्द नागर ने अपना गुरूकुल से पुराना परिचय बताया श्री दिनेश खेड़ा ने क्षेत्रीय समस्याओं के समाधान हेतु संघर्ष करते रहने का आह्वान किया। कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाने के लिए जैविक खेती के लिए प्रोत्साहित किया वैज्ञानिक श्री रवीन्द्र सिंह जी मंत्री जिला सभा शामली ने अपने आधुनिक खाद से होने वाली हानि से अवगत कराया इस अवसर पर पांच ऐसे किसानों को भी सम्मानित किया गया जिसमें अमर पाल सिंह आर्य बहादुरगढ़, श्री लल्लू सिंह आर्य श्यामपुर, श्री ज्ञानेन्द्र चौधरी जरौठी, श्री श्रद्धानन्द जी तिगरी, श्री रतनवीर सिंह जी त्यागी दतियाना रहे। कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। सायं काल युवा चरित्र निर्माण सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती ने की तथा मुख्य अतिथि स्वामी आर्यवेश जी सरस्वती अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रहे। आपने वर्तमान में चल रही शिक्षा पद्धति से युवा शक्ति को किस प्रकार बिगाड़ा जा रहा है इस विषय में भावी पीढ़ी को सावधान किया और गुरूकुल की परम्परा ही चरित्र निर्माण के लिए ऋषियों की योजना है इस पर प्रकाश डाला। स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती ने गुरूकुल के छात्रों की प्रशंसा की कि स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती भावी पीढ़ी का निर्माण कर देश के लिए सौंप रहे हैं यह हमारा सौभाग्य है कि आर्य भजनोपदेशक ब्र. कड़कदेव जी एवं म. जगमाल सिंह जी तथा *रामवीर तूफान पं. दिनेश दत्त* जी ने अपने भजनो से लाभान्वित किया अंत में सभा प्रधान जी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। विशिष्ट अतिथि प्रेममुनि जी लखनऊ रहे।

७-११-२०१५ को प्रातः योग साधना स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने कराई तथा आसन प्राणायाम के लाभ बताये तत्पश्चात पवित्र यज्ञशाला में युवकों को यज्ञोपवी संस्कार एवं वृद्धों को वानप्रस्थ दीक्षा प्रदान की तथा गुरूकुल पूठ के लिए समर्पित अरविन्द आचार्य जी ने सन्यास आश्रम में प्रवेश किया। यह एक अद्भुत दृश्य था सारे गुरूकुल में हर्षमिश्रित आश्चर्य का वातावरण था कि एक युवा सीधे ब्रह्मचर्य से ही सन्यास आश्रम में प्रवेश कर रहा है। धन्य है इसके माता पिता एवं धन्य है इनके गुरूजन जिन्होंने ऐसे पवित्र और दृढ़ संस्कार दिये जो संसार से वैराग्य धारण कर विरक्त भाव से सन्यासी बन रहा है। यज्ञ के उपरान्त दीक्षा का कार्य प्रारम्भ हुआ जो स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी कर रहे थे वैदिक विद्वान स्वामी चन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में यह सारा कार्य सम्पन्न हुआ। स्वामी जी ने आशीर्वाद दिया तथा स्वामी विश्वानन्द जी मथुरा ने भी अपने विचार प्रकट किये। इस संस्था से अपना पुराना परिचय बताया सभा प्रधान जी ने भी अपनी शुभ कामनायें प्रदान की । वानप्रस्थ दीक्षा चलो में १. सत्यमुनि जी खैया २. राममुनि जी बदांयू ३. श्री नकुल मुनि बनभौरा ४. श्री सोममुनि ढकरौली जी रहे। इसी समय वेद संस्कृति सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जो ब्र.अरविन्द आचार्य जी के विषय में श्री हरवीर सिंह सुमन मेरठ श्री रामसिंह जाखड़ श्री डा. आर.पी. सिंह जी तथा श्री कर्नल ढाका ने भी अपनी शुभकामनायें प्रदान की। ईशभक्ति के भजनों से सारा वातावरण भक्तिमय बन गया था भोजनोपरान्त ''पर्यावरण संरक्षण-गंगा बचाओ-बेटी बचाओ'' सम्मेलन में मा. ज्ञानेन्द्र सिंह मंत्री, तेजपाल सिंह मंत्री जिला सभा गाजियाबाद, ब्र. पूरण सिंह उप प्रधान सभा ने सम्बोधित किया। मा. हरीश पाल जी का गीत सभी ने सराहा सभा उप मंत्री गिरिजा त्रिपाठी जी का भाषण प्रेरणाप्रद रहा। अशोक त्यागी स्याना, बेचन सिंह सभा उप प्रधान मिर्जापुर, रमाशंकर आर्य अधिष्ठाता पूर्वी उ.प्र. जौनपुर का भाषण क्रांतिकारी रहा। आचार्य ऋषभ शास्त्री दिल्ली के भाषण की चर्चा सर्वत्र रही। दिनेश दत्त के भजन तथा वक्ताओं के विचारों से सम्मेलन सफल रहा। गुरूकुल के ब्र. का आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन हुआ जिसका उद्घाटन भाषण सभा प्रधान जी ने दिया। सभा प्रधान जी का स्वागत ब्र. दयानन्द आर्य ने धनुष से माला पहनाकर किया। आचार्य धर्मवीर जी रवि शास्त्री एवं आचार्य राजीव जी पुष्पेन्द्र शास्त्री के संयुक्त संयोजन में सर्वांग सुन्दर व्यायाम, सूर्य भूमि नमस्कार, जूडो कराटे, दण्ड बैठक, डम्बल, लेजियम, सामूहिक योगासन, स्तूप निर्माण, मल्लखम्भ के आसनों का सफल प्रदर्शन हुआ। रात्रि में शिक्षा सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें डा. रवीन्द्र कुमार मंत्री जिला सभा शामली ने अध्यक्षता की तथा लखनऊ के प्रेममुनि जी वानप्रस्थ मुख्य अतिथि रहे। लखनऊ से श्री वीरेन्द्र सरस्वती, रामसेवक जी तथा सोनभद्र बगहा से नगेन्द्र सिंह जी को भी सम्मानित किया गया। क्षेत्रीय आर्य समाजों के अधिकारियों ने सम्मान किया। आचार्य प्रमोद जी पसवाड़ा, आचार्य रणधीर शास्त्री मेरठ, आ. कुंवरपाल शास्त्री जी मु.नगर के भाषण प्रभावशाली रहे। प्रधान पद्म सिंह भगवानपुर, कृपाल सिंह शास्त्री, हरिकृष्ण आचार्य गु. कुण्डा, ऋषिपाल जी भडाना, बु.शहर विशिष्ट अतिथि रहे। अध्यक्ष जी ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

८-११-१५ को प्रातः ६ बजे से योग साधना प्राणायाम-आसनों का अभ्यास कराया गया ८ बजे से यज्ञ प्रारम्भ हुआ यजमान के रूप में श्री अशोक आर्य पिलखुवा, श्री रणजीत सिहं आर्य एक्वाड़ा सम्भल श्री नरेन्द्र आर्य स्याना, श्री धनन्जय भाटी ग्रेटर नोएडा रहे। पूर्णाहुति पर प्रि सत्यानंद आर्य, महावीर सिंह पधारे स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, प्रधान देवेन्द्र पाल वर्मा उ.प्र. रहे। सभी को आशीर्वाद दिया तत्पश्चात आर्य परिवार निर्माण सम्मेलन सत्यानन्द आर्य जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। मुख्य अतिथि ओमवीर सिंह जी.एम. शुगर मिल बिलारी रहे। आपके विचारों से जनता लाभान्वित हुई। गुरूकुल पौधा देहरादून के आचार्य डा. धनन्जय आर्य का भाषण बड़ा प्रभावशाली रहा। अमेरिका से पधारे डा. सतीश जी का भाषण सभी ने सराहा, श्री राजवीर शास्त्री दिल्ली का भी भाषण हुआ अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली ने डा. सतीश जी का स्वागत किया ''राष्ट्र रक्षा सम्मेलन'' के अध्यक्ष देवेन्द्र पाल वर्मा जी सभा प्रधान रहे तथा मुख्य अतिथि ठा. विक्रम सिंह आर्य मेरठ ने क्रांतिकारी भाषण दिया। आपने देश धर्म की रक्षा के लिए संकल्प दिलाया सत्यानन्द आर्य ने अच्छा परिवार बनाने की विधि बताई। शौदान सिंह आर्य ने गुरूकुल के प्रारम्भिक क्षणों की याद दिलाकर सभी को भावुक कर दिया। सभा को अध्यक्ष डा. धीरज सिंह जी ने भी गुरूकुल की उन्नति की कामना करते हुए अपने विचार प्रकट किए। सभा प्रधान जी एवं स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती प्रबंधक जी ने गुरूकुल के सहयोगी एवं सम्मेलन के लिए समर्पित आर्यो का स्वागत किया। डा. विकास अग्रवाल जिला सभा हापुड़ सन्तोष राघव बु.शहर, श्रीमती अनीता भारद्वाज बु. शहर, अभय सोती, श्री राममुनि जी, रमेश सिंह एडवोकेट, निर्मल रस्तोगी मुरादाबाद की मातायें, अ.स. जनकपुरी सी-३ के प्रधान श्री शिवकुमार जी मदान एवं मंत्री तथा सभी अधिकारियों को सम्मानित कियाग या ठा. विक्रम सिंह जी का विशेष सम्मान किया गया। अशोक आर्य स्याना का शिव कुमार शास्त्री जी द्वारा आभार व्यक्त किया गया। सुनील कुमार आर्य गुलावठी, महेन्द्र आर्य सूरजपुर, आ.स.हसनपुर अमरोहा, प्रदीप आर्य सम्भल, आ.स. मण्डी धनौरा, ओमपाल सिंह प्रधान जिला सभा अमरोहा, विनय आर्य, राजनाथ आर्य, ठाकुर सिह आर्य, हेतराम सागर आदि आदि अमरोहा के लोगों को सम्मानित किया गया। बिजनौर - सहारनपुर, मु. नगर तथा बागपत और गौतमबुद्ध नगर की जिला सभाओं के अधिकारियों का वि. सम्मानित अतिथि के रूप में सभा प्रधान जी ने स्वागत किया। सभा उप प्रधान अरविन्द आर्य बुढाना का भी प्राचार्य राजीव कुमार जी ने स्वागत किया स्नातक एवं पूर्व छात्रों का आचार्य दिनेश जी एवं स्वामी अखिलानन्द जी ने स्वागत किया। सोमेन्द्र शास्त्री एवं नारायण जी शास्त्री ने इसी वर्ष नैट एवं जी.आर.एफ निकाला है सभा प्रधान जी ने इन्हें अपना आशीर्वाद दिया वर्तमान में कार्यरत आचार्यो में भी आधे यहीं के स्नातक हैं उनको भी सम्मानित किया गया। अंत में स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती एवं स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती और शौदान सिंह, प्राचार्य राजीव जी ने सभा प्रधान जी एवं सभा कोषाध्यक्ष जी का भी अभिनन्दन सम्मान प्रतीक चिन्ह एवं शाल उढ़ाकर किया। तत्पश्चात स्वामी जी ने सभी विद्वानों, उपदेशकों अतिथि एवं सहयोगियों तथा कार्यकर्ताओं का धन्यवाद दिया तथा शांतिपाठ के साथ रजत जयंती एवं प्रांतीय आर्य महासम्मेलन कार्यक्रम प्रभु कृपा से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का भी आयोजन दिल्ली से पधारे डा. त्यागी जी की अध्यक्षता में हुआ उन सभी डा. बंधुओं का भी आभार व्यक्त किया गया। भोजन व्यवस्था राजपाल सिंह आर्य पिलखुवा देख रहे थे। मनोज शास्त्री जी साथ रहे उन्हें भी धन्यवाद दिया गया। पुनः आप सभी ने तन-मन-धन से सम्मेलन सफल किया सभी के प्रति मैं आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. एवं गुरूकुल परिवार, प्रबंध समिति की ओर से आभार व्यक्त करता हूँ।

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२४४१/५७ - आर्यमित्र २४ नवम्बर, २०१५ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४-२०१६-१८

एक प्रति ₹ २.००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२, सम्पादक-६५३२७४६६८
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

.....

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन हापुड़ के कतिपय चित्र यहाँ प्रस्तुत है-

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ़सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित

लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।